27 June, 2008 ।। नाड़ी-दोष ।।

प्राय देखने में आता हैं कि जिनके पास भोज्य पदार्थो की कोई कमी नही हैं, उनके पास उन्हे खाकर पचाने की सामर्थ्य नही होती । अत्यन्त धनवान व्यक्ति भी ऐसे रोगों से ग्रस्त रहते हैं जिन्हे मूंग की दाल नही पचती और जो लोग हष्ट पुष्ट हैं और प्रत्येक प्रदार्थ को पचाने की सामर्थ्य रखते हैं, उनके पास कुछ खाने को नही होता । सुन्दर स्त्री के रहते मनुष्य में सम्भोग की शक्ति का होना आवश्यक हैं, उसी तरह धन दौलत होने से उसका सदुपयोग होना आवश्यक हैं । खाने पीने के पदार्थो का सुलभ होना और साथ में खाने पीने की सामर्थ्य होना, भोग विलास की शक्ति के साथ साथ उसकी तृप्ती के लिये सुन्दर स्त्री का होना और धन सम्पति के साथ उसके उपभोग का होना तथा दान आदि की प्रवृति भी होना पुर्वजन्म का संयोग होता हैं । मूर्खतावश न पहचाना गया रोग शुरू में तो अणु के समान ही रहता हैं किन्तु धीरे धीरे बढ़ता जाता हैं । रोग बढ़कर बलवान हो जाता हैं और उस मूर्ख व्यक्ति के बल और शरीर को नष्ट करने लगता हैं । मूर्ख व्यक्ति तब तक रोग दूर करने के उपाय नही करता जब तक वह बहुत पीड़ीत और विवश नही हो जाता लेकिन तब तक वह काफी कमजोर हो चुका होता हैं इसलिये बलवान हो चुके रोग से मुक्ति पाने मे उसे कठिनाई भी होती है और देर भी लगती है । जिस तरह कटा हुआ वृक्ष फिर से हरा हो जाता हैं उसी प्रकार रोग को समूल नष्ट न किया जाये तो वह फिर बढ़ जाता हैं । जैसे अनुकूल ऋतु व जल उपलब्ध होने पर जड़ से पुनः शाख व पत्ते फूट आते हैं उसी प्रकार यदि रोग को दबा दिया जाये और रोग को कारण सहित समूल नष्ट न किया जाये तो अपने अनुकूल दूषित आहार-विहार और अपथ्य का सयोंग होने पर ऐसा रोग फिर से पनप कर शरीर को ग्रस्त कर लेता हैं ।

थैलेसिमिया, वो बीमारी हैं जिसमें मनुष्य के शरीर में ऐक समय के बाद रक्त बनना रूक जाता हैं । इसका कारण जानने के लिये मैंने और खोज की तो पता चला कि मनुष्य के शरीर में जो जीन्स होते हैं वे दो चैन्स के रूप में होते हैं जिन्हे अल्फा-बीटा कहा जाता हैं । इन चैन्स अथवा जंजीर में जो कड़ीयॉ होती हैं वे मनुष्य को उसके अनुवांशिक ढंग से बढ़ने में सहायता करती हैं और मनुष्य अपने बड़ो अथवा अपने अनुवांशिक रंग रूप को पाता हैं । ईन्ही जीन्स के अंन्दर सुप्रसिध्द डी एन ए पाया जाता हैं जो जीन्स की सहायता के साथ शरीर को अनुवाशिक ढंग से बढ़ने में मदद करता हैं । ईन्ही जीन्स की अल्फा-बीटा नामक चैन्स में जो कड़ियॉ होती हैं उन्ही कड़ियों में से कोई एक कड़ी होती हैं जो शरीर में लिम्फोसाईट, होमोग्लोबीन अथवा रक्त बनाने में सहायता का कार्य करती हैं । जब ये कड़ी कमजोर पड़ जाती हैं, टूट जाती हैं अथवा सक्रिय नही रहती तो शरीर में रक्त बनना रूक जाता हैं और मनुष्य थैलेसिमिया नामक बीमारी से पीड़ीत हो जाता हैं ।

अपनी स्वभाव सुलभ जिज्ञासा के कारण मैंने ये जानना चाहा कि ये बीमारी क्यों होती हैं और इसके लिये मैं कई प्रसिध्द डॉक्टर्स से मिला तो उन्हौने बताया कि ये ऐक अनुवाशिंक बीमारी हैं । दो ऐसे लोग जो विवाह सूत्र में बधने जा रहे हो और दोनो ही थैलेसिमिया माईनर हो तो ऐक ऐसे बच्चे को जन्म देगें जिससे थैलेसिमिया मेजर बच्चा पैदा होगा । ऐसा बच्चा जब तक विकास के दौर में होगा तब तक इसके नये नये लिम्फोसाईट बनते रहेगें और नित्य प्रतिदिन नया रक्त बनता रहेगा तथा बच्चा स्वस्थ रहेगा परन्तु जैसे ही विकास रूकेगा वैसे ही रक्त बनना रूक जायेगा और नये रक्त के बिगैर शरीर मृत्यु की ओर अग्रसर होने लगता हैं ।

थैलेसिमिया माईनर वो लोग होते हैं जिनके जीन्स में अल्फा अथवा बीटा नामक चैन्स में कोई कड़ी कमजोर तो होती हैं परन्तु धीमी गति से सक्रिय रहती हैं । ऐसे में जंहा ऐक स्वस्थ मनुष्य में अल्फा-बीटा नामक चैन्स की कड़ी प्रतिदिन ही स्वस्थ लिम्फोसाईट का निर्माण करती हैं जोकि अधिकतम इक्कीस दिन तक जिवित रहते हैं परन्तु थैलेसिमिया माईनर लोगों में ये अवधि कुछ दिन कम होती हैं । तभी ईन्हे थैलेसिमिया माईनर कहा जाता हैं । ऐसे ही दो लोग जब विवाह सूत्र में बध जाते हैं तो ऐक थैलेसिमिया मेजर बच्चे को जन्म देते हैं । जिसमें ये कड़ी पुरी तरह गुम होती हैं अथवा निष्क्रिय होती हैं । मैंने और जानना चाहा कि क्या दो थैलेसिमिया माईनर लोग जब विवाह सूत्र में बध जाते हैं तो उनके सभी बच्चें थैलेसिमिया मेजर पैदा होगें ? तो पता चला कि ऐसा नही होता हैं कभी कभी कोई बच्चा होता हैं और कोई नही होता हैं । इसका क्या कारण था मुझे पता नही चला । अभी शायद इस पर खोज चल रही हैं ।

बहरहाल जो सर्वसम्मत मत था वो ये कि विवाह सूत्र में बधें दो लोगों में से ऐक अगर थैलेसिमिया माईनर हैं और दूसरा नही हैं तो पैदा होने वाला बच्चा थैलेसिमिया माईनर भी नही होता हैं । परन्तु ऐसा भी देखा गया हैं दोनो के थैलेसिमिया माईनर होने के बावजूद भी बच्चा स्वस्थ पैदा हुआ और ऐसा भी देखा गया कि दोनो के थैलेसिमिया माईनर होने के बावजूद पहला बच्चा स्वस्थ था और दूसरा बच्चा थैलेसिमिया मेजर पैदा हो गया । कभी कभी पहला बच्चा थैलेसिमिया मेजर होने के बावजूद दूसरा स्वस्थ पैदा हुआ । ऐसा भी होता हैं कि पती पत्नी दोनो के थैलेसिमिया माईनर होने के बाद भी बच्चा थैलेसिमिया मेजर नही बल्कि थैलेसिमिया माईनर ही पैदा हुआ । जो भी हो, डॉक्टर्स इस बीमारी से उलझें हुऐ हैं और निरंतर इसकी खोज में लगे हैं । आज नही तो कल इसके इलाज भी ढूंढ ही लिये जायेगें परन्तु ऐक बात जो मैंने सभी डॉक्टर्स में देखी वो ये कि उनके पास इस बात का कोई जवाब नही था कि ये बीमार आरंभ कंहा से होती हैं । सभी ने ऐक मत से यही कहा कि ये अनुवांशिक बीमारी हैं और पहले किसी बड़े बुजुर्ग में रही हैं तो भविष्य में किसी बच्चे में ये आयेगी ।

किसी बड़े बुजुर्ग में ये बीमारी कंहा से आयी ? मैं ये जानना चाहता था । फिर और जो डॉक्टर्स ने बताया वो इस प्रकार था कि ऐक ही तरह के अनुवांशिक नक्शे में पैदा हुऐ लोग अगर विवाह सूत्र में बधंते हैं तो ये बीमारी हो सकती हैं । अर्थात दो ऐसे लोग जिनका जीन्स और डी एन ए मैप ऐक जैसा हो, तो ये बीमारी हो सकती हैं । इसी विचार विमर्श के दौरान बात इतिहास की ओर मुड़ गई और पता चला कि बहुत पहले सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत पर बाहरी आक्रमणकारी जब आक्रमण करते थे और निरंतर यंहा बने रहते थें तो ऐक ही समय में यंहा कई महिलाओं से शारिरिक संबंध बनाते थे और कालांतर में उन्ही से पैदा हुऐ बच्चे जब आपस में और अन्जानें में विवाह सूत्र में बध जाते थें तो इस विकृत अनुवाशिक बीमारी का जन्म हो जाता था और पीढ़ी दर पीढ़ी अबतक वे लोग इसे ढो रहे हैं । इसके अलावा अपनी जाति अपने वंश को बनायें रखने की लालसा में बहुत पहले बहुत सी शादिंया अपने ही वंश और जाति में करने का रिवाज हुआ करता था । जाने अंजाने ऐसे लोगो ने भी इस बीमारी को बढ़ाने का काम किया हैं ।

मुझे शास्त्रों में लिखा हुआ याद आया कि ऐक ही परिवार में, ऐक ही वंश, सपिण्डता में, ऐक ही प्रवर में और ऐक ही गोत्र में विवाह करने की मनाही हैं । परिवार और वंश तो आप जानते हैं, सपिण्डता उसे कहते हैं, जो लोग अपने पूर्वजों को पिण्डदान देने में अधिकारी हो, जिन्हे सूतक व पातक लगता हो, जों जलांजली देने में अधिकृत हों और इसके अलावा पिता की सात पीड़ियों और माता की पॉच पीड़ियों में जो लोग कुटुम्बी पड़ते हो ऐसे सभी लोग सपिण्ड कहलाते हैं । प्रवर उसे कहा जाता हैं जो मूल ऋषि के गोत्र के प्रवर्तक हों, जैसे भारद्वाज गोत्र के प्रवर्तक हैं अंगिरस, बार्हस्पत्य और भारद्वाज ये वो उप ऋषि हैं जो भारद्वाज गोत्र के प्रवर माने जाते हैं । शास्त्रों की इन सब बातों को अनदेखा किया गया और ज्ञान और कर्म का गलत मिश्रण हो गया, ज्ञान तो हैं परन्तु कर्म बलवान बना दिया गया और देखिये विकृति हमारे सामने हैं । जाति और वंश को बनाये रखने के रिवाज ने और बहुत सी स्त्रियों से शारिरिक संबंध बनाने की महात्वांकाक्षा ने ज्ञान को ताक पर रख दिया और थैलेसिमिया के रूप में प्रकृति का प्रकोप प्रकट हो गया हैं । विष्णु पुराण में कहा हैं, "सप्तमी पितृपक्षाच्च मातृपक्षच्च पंचमीम् । उद्वहेत् द्विजो भार्या न्यायेन विधिना नृप ।। इसके अलावा भी शास्त्र कहते हैं कि चाचा की साली, सौतेली मॉ की बहिन, चाची की बेटी, सौतेली मौसी की बेटी, सगे भाई की साली, सगी मौसी और अपने गुरु की बेटी से विवाह नही करना चाहिये । ऐसे विवाह आने वाली पीढ़ियों के लिये विकृति पैदा करते हैं । थैलेसिमिया जैसी बीमारी तो हम देख लेते हैं परन्तु ऐसी बहुत सी विकृतिया और भी हैं जो हम देख नही पाते हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी ये पृष्ठभूमि से कार्य करती रहती हैं । इससे परिवारों में कलह, क्लेश, बीमारियां और

अंतत वंश नाश हो जाता हैं ।

कई लोग कहते हैं कि ये बीमारी पहले नही थी, ये वर्तमान समय की नयी बीमारी हैं । नयी इसलिये हैं क्योकि कर्म रूपी खोज अब की गई हैं ज्ञान रूपी मनाही तो बहुत पहले से हैं । कई लोग कहते हैं कि अब सालों पहले बाहर के आक्रमणकारियों ने अगर कई महिलाओं से शारिरिक संबंध बनायें और उनके बच्चों ने अगर आपस में विवाह कर लिया तो उन्हे कैसे पहचाने ? जाति और वंश को बनाये रखने के लिये अगर विवाह किये गये तो क्या बुरा हैं । जाहिर हैं, भाई बहनों को तो विवाह सूत्र में नही बाधां होगा ? हॉ, ये तो हैं परन्तु हमारे पास ज्योतिष जैसी तीव्र दृष्टि भी तो हैं जिससे कुछ छुपा नही होता । हम ये मानते हैं कि सालों पहले आक्रमण कारियों ने इस विकृति का बीज बोया था और जाति और वंश को बनाये रखने की लालसा ने भी इस विकृति को और बढ़ाया परन्तु बाद में तो ये अलग अलग विकृतिधारी लोग भी आपस में मिलकर इसको बढ़ाते रहे हैं । उसका क्या ?

ज्योतिष सदियों से कहता रहा हैं कि नाड़ी दोष में विवाह नही करना चाहिये । नाड़ी दोष ही वो दोष हैं जिससे थैलेसिमिया जैसी विकृति ने जन्म लिया हैं । त्रिनाड़ी चक्र में, चर्तुनाड़ी चक्र में और गर्ग एंव नारद सहिंता में इसे विस्तर्त रूप में बताया गया हैं कि नाड़ी दोष में विवाह करने पर विकृत संतान का जन्म होता हैं । ज्योतिष के २७ नक्षत्रों में तीन नाड़ीयों का जिक्र हैं आदि, मध्या और अन्त्या अगर वर वधु की ऐक जैसी नाड़ी हो तो विवाह को वर्जित बताया गया हैं । किसी को पहचानने की आवश्यकता ही क्या हैं ? आप बस नाड़ी दोष देखें और विवाह की मनाही करें ।

आयुर्वेद, जिसे भारतीय संस्कृति में पॉचंवा वेद कहा जाता हैं । सदियों पहले आयुर्वेद ने बताया हैं कि वात्त, पित्त और कफ नामक तीन नाड़ीयां होती हैं जोकि शरीर में त्रिदोष प्रकृति को नियंत्रित करती हैं । ईन्ही से सम्पुर्ण शरीर व्यवस्था के संचालन का कार्य होता हैं । आयुर्वेद में बताया गया हैं कि अगर पित्त बढ़ रहा हो उसके विपरित स्वभाव के पदार्थो का सेवन करना चाहिये जैसे पित्त अग्नि तत्व के स्वभाव का है। इसके बढ़ने से शरीर में अग्नि तत्व की बढ़ोतरी हो जाती हैं और शरीर रूखा और असुन्दर होने लगता हैं । ऐसे में पित्त के विपरित स्वभाव वाले पदार्थ सेवन करने चाहिये जैसे पित्त अग्नि तत्व का हैं तो कफ जल तत्व का हैं । पित्त के बढ़ने से जल तत्व संबंधी पदार्थ सेवन करने से पित नियत्रित होता हैं । सोचिये अगर आपमें पित्त की समस्या हैं और आप उपर से मिर्चो वाला गरम खाना खा रहे हैं तो आपके शरीर में पित्त की समस्या बढ़ती जायेगी खटटी डकारें और अरूचि बढ़ती जायेगी और अंतत ऐक विकृति के रूप में आपके अंदर एसीडीटी की बीमारी जन्म ले लेगी । यही सिंध्दात नाड़ी दोष ज्योतिष में भी कार्य करता हैं ।

ऐक ही नाड़ी में जन्म लिये दो लोग अगर विवाह सूत्र में बधते हैं तो गर्भधारण के समय उस नाड़ी संबंधी तत्व की अधिकता हो जायेगी और वीर्य तथा रज का मिश्रण गर्भाशय में ऐक विकृति के साथ बच्चे को आकार देगा । यही थैलेसिमिया का कारण हैं । लेकिन अगर अलग अलग नाड़ी में जन्म लिये लोग विवाह सूत्र में बधते हैं तो अलग अलग तत्व ऐक दूसरे को नियंत्रित किये रहेगें और गर्भधारण विकृति से दूर रहेगा ।

दरअसल समाज की रचना करना इतना आसान काम नही हैं । इसमें वर्षो लगते हैं और इसके निर्माण की प्रक्रिया भी इतनी आसान नही हैं । जब हम विवाह के लिये कुण्डली का मिलान करते हैं तो हम ऐक नये परिवार की रचना की बुनियाद बना रहे होते हैं । जब ऐक अच्छा परिवार बनता हैं तभी उससे ऐक अच्छे समाज के बनने की प्रक्रिया आरंभ होती हैं । ये हमारे ऋषि मुनियों का ही कमाल हैं कि उन्हौने विवाह नामक बीज में समाज का हरा भरा पेड़ छुपा रखा हैं । इसलिये कुण्डली मिलान सावधानी से करना चाहिये ।

प्रत्येक जातक की जन्म कुण्डली में उसके स्वभाव और प्रकृति के वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, गण, भकूट और नाड़ी के रूप में ३६ गुण माने जाते हैं । जब विवाह के लिये वर - वधु की कुण्डली मिलायी जाती हैं तो इनके अधिकतर मिलने से विवाह में साम्यता अथवा मधुरता रहती हैं । जब वर्ण- का मिलान देखा जाता हैं तो इससे नर और नारी के बीच प्रकृति, व्यक्तित्व और जाति पंरपरानुसार चलने की साम्यता को देखा जाता हैं । वश्य- से ऐक दूसरे के प्रति आकर्षण और अधिनता को देखा जाता हैं । तारा- से वैवाहिक जीवन में मधुरता और वियोग के प्रतिशत को देखा जाता हैं । योनि- से नर और नारी के बीच यौन संबंध और शारिरिक संतोष के प्रतिशत को आंका जाता हैं । ग्रह मैत्री- से नर और नारी के बीच परस्पर मित्रभाव, सम भाव और शत्रु भाव को आंका जाता हैं । गण- से नर, नारी के बीच उनकी प्रकृति की ऐकरूपता को आंका जाता हैं । भकूट- से परस्पर राशि के लेन देन को आकां जाता हैं कि दोनो की राशि में कितनी दूरी हैं और उससे वे ऐक दूसरे से कितने लेन देन पर हैं । मान लिजिये नर की राशि हैं मकर हैं और नारी की राशि मीन हैं तो इससे दोनो के बीच तृतिय ऐकादश लेन देन हुआ अर्थात ऐकादश लेना हुआ नारी के लिये और तृतिय लेना हुआ नर के लिये इससे सदा ही नारी, नर से कुछ ना कुछ पाती रहेगी । अगर इससे उल्टा हुआ तो सदा ही नर, नारी से कुछ ना कुछ पाता रहता हैं । अंत में नाड़ी दोष- को देखा जाता हैं जिससे पता चलता हैं दोनो में नाड़ी दोष नही हैं तो वात पित और कफ की नाड़ीया अलग अलग होगी और संतान उत्पन्न करने में सहुलियत होगी ।

आजकल कम्प्युटर का जमाना हैं और कुण्डली मिलान के दौरान कम्प्युटर तुरन्त ही नाड़ी दोष का संकेत करता हैं । परन्तु बात इतनी सरल नही हैं । कम्प्युटर कई बार गहराई का विश्लेषण नही कर पाता हैं । नाड़ी-दोष के तीन बहुप्रसिध्द मत शास्त्रों में वर्णित हैं । त्रिनाड़ीचक्र, चर्तुनाड़ीचक्र और पंचनाड़ीचक्र । त्रिनाड़ीचक्र प्रसिध्द मत हैं जिसे साधारणयता देखा जाता हैं । इसमें नक्षत्रों की तीन लाईनें होती हैं और प्रत्येक लाईन में नौ नौ नक्षत्र होते हैं । एक ही सीध में पड़ने वाले नक्षत्रों में अगर वर-वधु का नक्षत्र पड़ जाये तो कम्प्युटर में नाड़ी-दोष का संकेत होने लगता हैं । एक ही नक्षत्र में अगर वर-वधु का नक्षत्र पड़ जाये तो भी नाड़ी-दोष का संकेत होने लगता हैं । परन्तु बात यंहा पर समाप्त नही हो जाती हैं ।

सबसे पहले तो ये समझा जाना चाहिये कि त्रिनाड़ीचक्र मूल रुप से एक विशेष सिध्दात पर चलता हैं । अगर वर-वधु के कुण्डली मिलान के दौरान दोनो के नक्षत्र एसी राशियों के हैं जिनमें कि नक्षत्र के चारो चरण पड़ते हैं तो ही त्रिनाड़ीचक्र प्रबल रुप से नाड़ी-दोष के होने अथवा ना होने को दर्शायेगा । अगर वर-वधु के नक्षत्र एसी राशियों में पड़ रहे हो जिनमें कि उनके नक्षत्र अलग अलग चरणों वाले हैं जैसे वर का नक्षत्र एसी राशि का हैं जिसमें नक्षत्र के तीन ही चरण पड़ते हैं और वधु का नक्षत्र एसी राशि का हैं जिसमें नक्षत्र के चारों चरण पड़ते हैं तो फिर इसे गहराई से विश्लेषित किया जाना चाहिये । एसे में कम्प्युटर के नाड़ी-दोष को दर्शाने के बावजूद भी नाड़ीदोष नही हो सकता हैं । एक ही नक्षत्र में होने वाले वर-वधु के कुण्डली मिलान के दौरान नक्षत्रों का चरण भी समान होना चाहिये अन्यथा एक ही नक्षत्र के अलग अलग चरणों में नाड़ीदोष नही होता हैं ।

चर्तुनाड़ीचक्र विशेष कुफल को प्रदर्शित करने वाला नाड़ी-दोष चक्र हैं । इसमें सात सात नक्षत्रों की चार लाईनों बनती हैं और अंतिम लाईन में अभिजीत नक्षत्र का भी समावेश किया जाता हैं । इसचक्र की विशेषता ये हैं कि ये सिंध्दातन त्रिपाद नक्षत्रों में विशेष फल दिखाता हैं । अगर वर-वधु दोनो के नक्षत्रों के तीन तीन चरण अपनी राशियों में पड़ते हैं तो ये चक्र सक्रिय हो जाता हैं और नाड़ीदोष के होने अथवा ना होने को प्रबल रुप से दर्शाता हैं । बहरहाल विद्वान इसे अपनी बुध्दी से विश्लेषित करें क्योंकि कम्प्युटर अभी इतनी सूक्ष्मता से निर्देशित नही हैं ।

अगला चक्र पंचनाड़ीचक्र हैं, इसमें छह छह नक्षत्रों की पाँच लाईनें बनाई जाती हैं और अंतिम लाईन में तीन ही नक्षत्र रखें जाते हैं । साधारणयता इसे हम गर्ग अथवा नारद सिध्दात कह सकते हैं । इसकी विशेषता द्विपाद नक्षत्रों की हैं । जिस राशि में किसी नक्षत्र के दो ही चरण पड़ते हों तो ये चक्र सक्रिय हो जाता हैं और कुण्डली मिलान के दौरान वर-वधु के नक्षत्र दो दो चरणों वाले हो तो ये प्रबल रुप ये नाड़ी दोष के होने ना होने को दर्शाता हैं ।

बहरहाल एलौपेथिक मेडिकल विज्ञान तो वात, पित्त और कफ के सिंध्दांत को ही नही मानता हैं ।